कृषि विज्ञान केन्द्र
गांधी विद्या मंदिर, सरदारशहर, चूरू (राज.)

ई–न्यूज लेटर

जून 2026, अंक: 26

कपास उत्पादन की उन्नत तकनीक हेतु कृषक प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 5 मई 2026 को गांव बरलाजसर में “कपास की उन्नत खेती पद्धतियाँ” विषय पर कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 25 किसानों ने सक्रिय सहभागिता निभाई। सस्य विज्ञान विशेषज्ञ हरीश कुमार रछोइया ने किसानों को कपास की उन्नत एवं क्षेत्रानुकूल किस्मों के चयन, बीजोपचार, संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन, सूक्ष्म पोषक तत्वों के उपयोग तथा ड्रिप एवं स्प्रिंकलर जैसी सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के महत्व के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि मृदा परीक्षण आधारित उर्वरक प्रबंधन एवं समन्वित कीट एवं रोग प्रबंधन तकनीकों को अपनाकर उत्पादन लागत को कम करते हुए अधिक उपज प्राप्त की जा सकती है। प्रशिक्षणार्थियों को गुलाबी सुंडी एवं अन्य प्रमुख कीटों के नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप, नियमित खेत निरीक्षण तथा अनुशंसित दवाइयों के वैज्ञानिक एवं संतुलित उपयोग ,जल संरक्षण आधारित कृषि तकनीकों एवं फसल अवशेष प्रबंधन अपनाने के लिए प्रशिक्षित किया गया।प्रशिक्षण के दौरान किसानों की विभिन्न कृषि संबंधी समस्याओं का समाधान किया गया तथा कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा संचालित तकनीकी गतिविधियों एवं आगामी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी भी प्रदान की गई।

ग्रीष्म ऋतु में डेयरी पशुओं के वैज्ञानिक प्रबंधन पर प्रशिक्षण आयोजित

गर्मी के मौसम में डेयरी पशुओं को होने वाले तापीय तनाव से बचाव एवं दुग्ध उत्पादन हेतु वैज्ञानिक प्रबंधन तकनीकों की जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से दिनांक 7 मई 2026 को गांव बरलाजसर में तथा दिनांक 9.5.2026 को गांव नैनासर में प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 62 पशुपालकों एवं ग्रामीण कृषकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पशुपालन विषय विशेषज्ञ श्री श्याम बिहारी ने बताया कि ग्रीष्म ऋतु में अत्यधिक तापमान के कारण पशुओं में ताप घात की संभावना बढ़ जाता है, जिससे दुग्ध उत्पादन, प्रजनन क्षमता एवं पशुओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इससे बचाव हेतु पशुओं को छायादार एवं हवादार स्थान पर रखना अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने हरे चारे, मिनरल मिक्सचर, स्वच्छ एवं ठंडे पानी की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने ,उचित वेंटिलेशन, फॉगर्स, पंखों एवं समय-समय पर पानी के छिड़काव जैसी व्यवस्थाओं को अपनाने की सलाह देते हुए बताया कि खनिज मिश्रण एवं विटामिन पूरक तत्वों के उपयोग से पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं दुग्ध उत्पादन में सुधार किया जा सकता है।प्रशिक्षण के दौरान पशुओं में गर्मी से होने वाले रोगों, बाह्य एवं आंतरिक परजीवी नियंत्रण, टीकाकरण, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन तथा पशु आवास की साफ-सफाई के महत्व के बारे में भी विस्तारपूर्वक जानकारी दी गई। कार्यक्रम में उपस्थित पशुपालकों की समस्याओं एवं जिज्ञासाओं का समाधान किया गया तथा कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा संचालित पशुपालन संबंधी विभिन्न तकनीकी कार्यक्रमों एवं योजनाओं की जानकारी भी प्रदान की गई।

खरीफ सीजन में गहरी जुताई (Deep Ploughing) के महत्व पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

किसानों को खरीफ फसलों की बुवाई से पूर्व खेत की तैयारी एवं गहरी जुताई तकनीकों के प्रति प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से दिनांक 12.05.2026 को गांव हुडेरा में "खरीफ सीजन में गहरी जुताई (Ploughing) का महत्व एवं तकनीकी" विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सस्य विज्ञान विशेषज्ञ हरीश कुमार ने किसानों को खरीफ फसलों जैसे बाजरा, मूंग, कपास एवं ग्वार आदि की बुवाई से पहले गहरी जुताई के महत्व पर विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि सही समय पर और उचित गहराई तक की गई जुताई से खेत की मिट्टी भुरभुरी हो जाती है, जिससे उसमें वायु संचार (aeration) बढ़ता है और जड़ों का विकास बेहतर होता है। साथ ही जुताई के माध्यम से खरपतवार, कीटों के अंडे एवं रोगजनक तत्वों का नियंत्रण भी संभव होता है। गहरी जुताई से वर्षा जल अवशोषण खेत में मिट्टी में ही हो पता है जिससे मिट्टी की नमी अवशोषण क्षमता भी बढ़ती है | कार्यक्रम के दौरान किसानों ने जुताई की गहराई, समय, यंत्रों के चयन तथा लागत संबंधी प्रश्न पूछे, जिनका विशेषज्ञ द्वारा सरल एवं तकनीकी रूप से समाधान किया गया।

बेर की प्रूनिंग एवं उन्नत उत्पादन तकनीकों पर कृषक समूह बैठक आयोजित

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा दिनांक 12 मई 2026 को तहसील रतनगढ़ के गांव हुडेरा में "बेर की प्रूनिंग तकनीक एवं उन्नत उत्पादन प्रबंधन" विषय पर एक कृषक समूह बैठक तथा दिनांक 19.05.2026 को ग्राम पुलासर में प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रमों में 55 किसानों ने सक्रिय भागीदारी की और बेर की आधुनिक बागवानी तकनीकों पर चर्चा करते हुए अपने-अपने अनुभव भी साझा किए।बैठक का उद्देश्य किसानों को बेर उत्पादन की वैज्ञानिक विधियों, कटाई-छंटाई प्रबंधन तथा बेहतर उपज प्राप्त करने की तकनीकों की सरल एवं व्यावहारिक जानकारी देना था। बागवानी विशेषज्ञ डॉ. अजय कुमावत ने किसानों को बेर की उन्नत किस्मों, पौधरोपण की सही विधि, पौधों की उचित दूरी तथा संतुलित खाद एवं सिंचाई प्रबंधन के बारे में जानकारी दी। उन्होंने विशेष रूप से प्रूनिंग तकनीक पर जोर देते हुए बताया कि बेर में फल नई शाखाओं पर आते हैं, इसलिए हर वर्ष फल तुड़ाई के बाद सूखी एवं रोगग्रस्त शाखाओं की छंटाई एवं किसानों को कटे हुए भागों का फफूदीनाशि द्वारा उपचार, जैविक खाद के उपयोग, ड्रिप सिंचाई और मल्चिंग जैसी तकनीकों को अपनाना चाहिए । साथ ही कीट एवं रोग प्रबंधन के लिए फेरोमोन ट्रैप, स्वच्छ बाग प्रबंधन और संतुलित दवाइयों के उपयोग पर भी चर्चा की गई।

मृदा एवं जल एकत्रण विधि पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित

दिनांक 16.05.2026 को ग्राम देवीपुरा में "मृदा एवं जल एकत्रण विधि की प्रक्रिया विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को मिट्टी एवं सिंचाई जल के वैज्ञानिक नमूना लेने की सही विधियों के प्रति प्रशिक्षित करना था। । प्रशिक्षण के दौरान बताया कि मिट्टी का सही विधि से लिया गया नमूना एवं उनके प्रशिक्षण परिणाम ही फसल पोषण प्रबंधन की आधारशिला होता है। इसके आधार पर ही उर्वरकों का संतुलित उपयोग किया जा सकता है, जिससे उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ मिट्टी की उत्पादकता भी बनी रहती है।साथ ही उन्होंने जल संग्रहण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सिंचाई जल की गुणवत्ता फसल उत्पादन को सीधे प्रभावित करती है। इसलिए जल के नमूने का सही चयन, संग्रहण एवं परीक्षण अत्यंत आवश्यक है।

किसानों को नमूना लेने की सही तकनीक, नमूना गहराई, नमूना स्थान चयन तथा उसे सुरक्षित रूप से प्रयोगशाला तक पहुंचाने की प्रक्रिया के बारे में प्रशिक्षित किया गया | कार्यक्रम के दौरान किसानों ने मृदा एवं जल परीक्षण से संबंधित विभिन्न प्रश्न पूछे, जिनका समाधान विशेषज्ञ द्वारा किया गया। किसानों को प्रयोगिक प्रदर्शन के माध्यम से नमूना लेने की प्रक्रिया भी समझाई गई।

लेहसुआ फल के प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन प्रशिक्षण आयोजन

ग्रामीण क्षेत्र की महिला किसानों को लेहसुआ फल से बनने वाले अचार एवं अन्य मूल्य संवर्धित उत्पादों की वैज्ञानिक, स्वच्छ एवं व्यवसायिक तकनीकों से दक्षता बढ़ाने के उद्देश्य से दिनांक 22 से 23 मई 2026 तक कृषि विज्ञान केंद्र में "लसोड़ा फल का प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन विषय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. रमन जोधा द्वारा लसोड़ा फल के चयन, ग्रेडिंग, सफाई, हल्की ब्लांचिंग द्वारा कड़वाहट कम करने, नमक उपचार, मसालों के उचित अनुपात में मिश्रण, सरसों तेल एवं अन्य परिरक्षकों के उपयोग, पैकिंग, भंडारण तथा शेल्फ लाइफ बढ़ाने जैसी संपूर्ण प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन तकनीकों पर विस्तार से प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने बताया कि लसोड़ा का प्रसंस्करण कर न केवल उत्पाद की गुणवत्ता एवं भंडारण क्षमता बढ़ाई जा सकती है, बल्कि इससे ग्रामीण महिलाओं के लिए स्वरोजगार एवं अतिरिक्त आय के अवसर भी सृजित होते हैं। प्रशिक्षण के दौरान महिला किसानों ने सक्रिय भागीदारी की तथा लसोड़ा अचार निर्माण की संपूर्ण प्रक्रिया को प्रायोगिक रूप से सीखा और अपनी शंकाओं का समाधान विशेषज्ञ से प्राप्त किया।

सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली स्थापना, संचालन, रख-रखाव एवं मरम्मत विषय पर प्रशिक्षण सम्पन्न

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा "सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली का स्थापना, संचालन, रख-रखाव एवं मरम्मत" विषय पर दिनांक 25 से 29 मई 2026 को प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रशिक्षण में हुडेरा (रतनगढ़) एवं बरलाजसर क्षेत्र के 20 कृषकों एवं कृषक महिलाओं ने भाग लिया। प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों को जल संरक्षण आधारित आधुनिक सिंचाई तकनीकों के वैज्ञानिक उपयोग एवं प्रबंधन के प्रति दक्ष करना था। डॉ. प्रवीन, विषय विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी) ने किसानों को ड्रिप एवं स्प्रिंकलर सिंचाई प्रणाली के महत्व के बारे में जानकारी देते

हुए बताया कि वर्तमान जल संकट की परिस्थितियों में माइक्रो इरिगेशन तकनीक अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है जिसके माध्यम से 40 से 60 प्रतिशत तक जल की बचत के साथ फसल उत्पादन एवं गुणवत्ता में भी वृद्धि की जा सकती है।

प्रशिक्षण के दौरान किसानों को सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली की संरचना एवं कार्यप्रणाली की जानकारी के साथ साथ मुख्य पाइप लाइन, सब-मेन, लेटरल, ड्रिपर, फिल्टर, वाल्व एवं वेंचुरी इकाई जैसे घटकों के बारे में तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। साथ ही विभिन्न फसलों के लिए जल आवश्यकता, ड्रिपर डिस्चार्ज क्षमता एवं सिंचाई समय निर्धारण के वैज्ञानिक आधार समझाए गए। प्रायोगिक सत्रों में कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में स्थापित ड्रिप सिंचाई प्रणाली का प्रदर्शन कर किसानों को पाइपलाइन बिछाने, ड्रिपर फिटिंग, लेटरल जोड़ने एवं वाल्व संचालन का प्रशिक्षण दिया गया। प्रशिक्षणार्थियों ने स्वयं माइक्रो इरिगेशन प्रणाली की स्थापना एवं संचालन की प्रक्रियाओं का अभ्यास किया। इसके अतिरिक्त किसानों को ड्रिपर चोकिंग, पाइप लीकेज, वाल्व खराबी एवं दबाव हानि जैसी समस्याओं की पहचान एवं समाधान के साथ-साथ पाइप जोड़ने, लीकेज मरम्मत, ड्रिपर बदलने एवं फिल्टर सफाई हेतु दक्ष किया गया

फर्टिगेशन हेतु उर्वरक टैंक प्रदर्शन का आयोजन

दिनांक 29.05.2025 को कृषि विज्ञान केंद्र परिसर में "फर्टिगेशन हेतु उर्वरक टैंक (Fertilizer Tank) के उपयोग एवं संचालन" विषय पर प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें हुडेरा (रतनगढ़) के 10 कृषकों ने भाग लेकर आधुनिक सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली के अंतर्गत फर्टिगेशन तकनीक की जानकारी प्राप्त की। डॉ. प्रवीन धांगड़, विषय विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी) ने किसानों को बताया कि फर्टिगेशन तकनीक के माध्यम से जल में घुलनशील उर्वरकों को ड्रिप सिंचाई प्रणाली द्वारा सीधे पौधों की जड़ क्षेत्र तक पहुंचाया जा सकता है, जिससे उर्वरकों की उपयोग दक्षता बढ़ती है तथा पोषक तत्वों की हानि कम होती है। प्रदर्शन के दौरान किसानों को उर्वरक टैंक की संरचना, कार्यप्रणाली एवं संचालन की तकनीकी जानकारी दी गई। किसानों को उर्वरक घोल तैयार करने, टैंक में भरने तथा ड्रिप प्रणाली के माध्यम से नियंत्रित मात्रा में उर्वरक प्रवाहित करने की प्रक्रिया का प्रायोगिक प्रदर्शन किया गया एवं फर्टिगेशन हेतु बतौर प्रर्दशन उर्वरक टैंक उपलब्ध करवाए गए |

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा तकनीकी एडवाइजरी जारी

कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा मई माह के दौरान लगातार बढ़ते तापमान एवं हीटवेव (लू) की स्थिति को देखते किसान सारथी पोर्टल एवं अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स (व्हाट्सएप ग्रुप, फेसबुक) के माध्यम से किसानों एवं पशुपालकों के लिए तकनीकी एडवाइजरी जारी की गई। पशुपालन क्षेत्र में विशेष रूप से पशुओं को लू से बचाव हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किए गए, जिनमें पशुओं को छायादार स्थान पर रखने, पर्याप्त स्वच्छ एवं ठंडा पेयजल उपलब्ध कराने तथा दोपहर के समय चराई से बचाने जैसी महत्वपूर्ण तकनीकी सिफारिशें शामिल थीं।कृषि क्षेत्र फसल प्रबंधन ,आगामी खरीफ सीजन की तैयारी हेतु एवं किसानों को गर्मी की तीव्रता को ध्यान में रखते हुए गहरी जुताई (डीप प्लॉइंग) करने की सलाह दी गई, जिससे मिट्टी में नमी संरक्षण, हानिकारक कीटों के अंडों का नाश तथा मिट्टी की भौतिक संरचना में सुधार सुनिश्चित हो सके। अनुमानित रूप से इस पूरे माह के दौरान जिले के लगभग 10,000 से 12,000 किसानों तक यह एडवाइजरी सफलतापूर्वक पहुंचाई गई।

संतुलित पोषक तत्व प्रबंधन एवं जैविक विकल्प प्रोत्साहन अभियान

कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर द्वारा "संतुलित उर्वरक उपयोग एवं जैविक विकल्पों के प्रोत्साहन" हेतु तकनीकी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण आधारित जागरूकता अभियान निरंतर संचालित किया जा रहा है। यह गतिविधि अप्रैल माह से सतत रूप से जारी है, जिसके अंतर्गत रतनगढ़ एवं सरदारशहर तहसील के लगभग 10 गांवों (पुन्नूसर, देवीपुरा ,हुडेरा ,पुलासर, बरलाजसर, दाउदसर आदि)को सम्मिलित किया गया है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य किसानों को मृदा स्वास्थ्य कार्ड की सिफारिश के अनुरूप उर्वरक उपयोग की विधियों से अवगत कराना तथा रासायनिक उर्वरकों के संतुलित एवं विवेकपूर्ण उपयोग को बढ़ावा देना है। साथ ही जैविक एवं पर्यावरण अनुकूल विकल्पों जैसे वर्मी कम्पोस्ट, गोबर की खाद, हरी खाद, बायो-फर्टिलाइज़र एवं माइक्रोबियल इनोकुलेंट्स के उपयोग हेतु किसानों को प्रेरित किया जा रहा है। है।अभियान के दौरान केंद्र के वैज्ञानिकों द्वारा व्हाट्सएप समूहों एवं अन्य जनसंपर्क माध्यमों के जरिए किसानों को नियमित रूप से तकनीकी संदेश, सलाह एवं वीडियो के माध्यम से जानकारी प्रदान की जा रही है, जिससे अधिक से अधिक कृषक इस पहल से जुड़ सकें।

प्रशिक्षकों द्वारा नियमित रूप से गांव स्तर पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, किसान गोष्ठियाँ एवं फील्ड डेमोंस्ट्रेशन आयोजित किए जा रहे हैं, जिनमें पोषक तत्व प्रबंधन की तकनीकें, मृदा परीक्षण रिपोर्ट की व्याख्या, फसल-आधारित उर्वरक अनुशंसा तथा सतत कृषि (Sustainable Agriculture) के सिद्धांतों पर विस्तार से जानकारी दी जा रही है।

संकलनकर्ता	संपादक	प्रकाशक
श्री हरीश कुमार रछोइया, विषय वस्तु विशेषज्ञ (सस्य विज्ञान) श्री श्याम बिहारी, विषय वस्तु विशेषज्ञ (पशुपालन) डॉ अजय कुमावत, विषय वस्तु विशेषज्ञ (बागवानी) डॉ प्रवीन, विषय वस्तु विशेषज्ञ (कृषि अभियांत्रिकी)	डॉ रमन जोधा, विषय विशेषज्ञ (गृह विज्ञान) Designed श्री सुनील कुमार वी वी (स्टेनो)	डॉ वी के सैनी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख कृषि विज्ञान केंद्र, सरदारशहर चुरु -1